साथ जी जागिए

साथ जी जागिए, सुनके सब्द आखिर।
सकल आउध अंग साज के, दौड़ मिलिए धनी निज घर।।

कोई सिर ल्यो तो लीजियो, धनिएँ केहेलाए साथ कारन।
न तो मेरे सिर जरूर है, एही सब्द बल वतन।।

सोई हुकम आए पोहोंचिया, जो करी थी सरत।
सब्द भी सिर पर लिए, आया वतन बल जाग्रत।।

सूता होए सो जागियो, जाग्या सो बैठा होए।
बैठा ठाढ़ा होइयो, ठाढ़ा पांउ भरे आगे सोए।।

यों तैयारी कीजियो, आगूं करनी है दौड़।
सब अंग इस्क लेय के, निकसो ब्रह्मांड फोड़।।

महामत कहें मेरे साथ जी, लीजो आखिर के वचन।
हुकम सरत पोहोंची दया, कछू अंग अपने करो रोसन।।